१०।५

ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां नाशितमात्मनः।
तेषामादित्यवज्ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम।।१६।।

ज्ञानेन=ज्ञान द्वारा; **तु**=किन्तु; **तत्**=वह; **अज्ञानम्**=अज्ञान; **येषाम्**=जिनका; **नाशितम्**=नष्ट हो गया है; **आत्मनः**=जीवात्मा का; **तेषाम्**=उनका; **आदित्यवत्**=उदित सूर्य के समान; **ज्ञानम्**=ज्ञान्; **प्रकाशयति**=प्रकाशित करता है; **तत्परम्**=कृष्ण-भावनामृत में।

अनुवाद

परन्तु जब जीव अज्ञान का नाश करने वाले ज्ञान से प्रबुद्ध हो जाता है, तो उसका वह ज्ञान सम्पूर्ण तत्त्व को उसी प्रकार प्रकट कर देता है, जैसे दिन में सूर्य सब कुछ प्रकाशित करता है।।१६।।

तात्पर्य

श्रीकृष्ण को भूल बैठने वाले अवश्य मोहित होते हैं। इसके विपरीत, कृष्णभावनाभावित पुरुष कभी मोहित नहीं हो सकते। भगवद्गीता (चतुर्थ अध्याय) में उल्लेख है: **सर्वं ज्ञानप्लवेन, ज्ञानाग्निः सर्व कर्माणि** तथा **न हि ज्ञानेन सदृशं।** ज्ञान सदा परम सम्मान्य है। उस ज्ञान का स्वरूप क्या है? पूर्ण ज्ञान श्रीकृष्ण के चरणयुगल की शरण ग्रहण करने से ही होता है, जैसा सातवें अध्याय के उन्नीसवें श्लोक में कहा है: **बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान् मां प्रपद्यते।** अनेक-अनेक जन्मान्तरों के उपरान्त जब पूर्ण ज्ञानी श्रीकृष्ण के शरणागत होता है अथवा कृष्णभावनाभावित बन जाता है तो उसके प्रति समग्र तत्त्व प्रकट हो जाते हैं, उसी प्रकार जैसे दिन में सूर्य सम्पूर्ण पदार्थ प्रकाशित करता है। जीवात्मा कितने ही प्रकार से मोहित होता है। उदाहरणस्वरूप, जब वह धृष्टतापूर्वक अपने को भगवान् मान बैठता है तो माया के सब से भीषण पाश में बँध जाता है। यदि जीव ईश्वर है तो वह मायामोहित कैसे हो सकता है? यदि ऐसा सम्भव है तो माया श्रीभगवान् से गुरुतर सिद्ध हुई। यथार्थ ज्ञान कृष्णभावनाभावित महापुरुष से ही प्राप्य है। अतएव ऐसे यथार्थ सद्गुरु के शरणागत होकर कृष्णभावनामृत की शिक्षा को हृदयंगम करे। जिस प्रकार भुवनभास्कर सूर्य अंधकार का निवारण करता है, उसी भाँति सद्गुरु सम्पूर्ण अज्ञान को दूर कर सकते हैं। यह हो सकता है कि देह से अतीत आत्मतत्त्व को पूर्ण रूप से जानने वाला भी आत्मा तथा परमात्मा में भेद न कर सके, पर भगवत्प्राप्त कृष्णभावनाभावित सद्गुरु की शरणागति से वह पूर्ण तत्त्वज्ञ हो सकता है। श्रीभगवान् के प्रतिनिधि के सान्निध्य में ही श्रीभगवान् का और श्रीभगवान् से अपने सम्बन्ध का ज्ञान हो सकता है। श्रीभगवान् के प्रतिनिधि का उनके समान आदर किया जाता है, क्योंकि वे भगवत्-तत्त्व को जानते हैं, परन्तु वे स्वयं अपने को भगवान् कभी घोषित नहीं करते। श्रीभगवान् और जीव में भेद का ज्ञान आवश्यक है। अतएव भगवान् श्रीकृष्ण ने द्वितीय अध्याय (२.१२) में कहा है कि प्रत्येक जीव का और उन (श्रीभगवान्) का अपना-अपना स्वरूप है। पूर्वकाल में